सीखने के संसाधन के रूप में वर्कशीट

पूजा विश्नोई

असल मायनों में स्कूल शिक्षक के तौर पर मेरी यात्रा मार्च 2019 में अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर से शुरू हुई। हमारे स्कूल में हम बच्चों के सम्पूर्ण विकास में विश्वास करते हैं और सभी इसके लिए कार्य करते हैं। मतभेदों के निवारण के लिए संवाद का तरीक़ा अपनाते हुए, हमने बच्चों को सार्थक अकादमिक अनुभव देने पर ध्यान केन्द्रित किया। शुरुआती तीन ग्रेड में हम बहुत-सी प्रकाशित सामग्री, विविध शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम), ऑडियो-विज़ुअल साधन, कविताओं और कहानियों इत्यादि के माध्यम से उन्हें मौखिक और लिखित सामग्री के अनुभव प्रदान करते हैं। मैं कक्षा-2 की कक्षा शिक्षिका थी और अँग्रेज़ी पढ़ाती थी। चूँकि यह मेरा शिक्षण का ऐसा पहला अनुभव था जहाँ मैं सीखने के भिन्न स्तरों वाले बच्चों के साथ बहुत गहराई के साथ काम कर रही थी, इसलिए एक नई शिक्षिका के तौर पर मुझे कई चीज़ों को सीखना और भूलना पड़ा। पूरे सप्ताह एक ही कविता पर काम करने से लेकर किसी विषयवस्तु/ अध्याय की समुचित योजना बनाने जैसे कामों में, बच्चों के साथ प्रतिदिन होने वाले मेलजोल, बातचीत ने मुझे एक बेहतर शिक्षक बनने में मदद की।

किसी विषयवस्तु/ अध्याय विशेष की मेरी योजना और निष्पादन में, मैंने नाना प्रकार के संसाधनों के साथ विविध गतिविधियाँ तैयार कीं। ऐसा करने के दौरान, वर्कशीट मेरे विद्यार्थियों के लिए सीखने के महत्त्वपूर्ण संसाधन के रूप में उभरकर आईं। यहाँ संसाधन के रूप में वर्कशीट के उपयोग का एक संक्षिप्त वर्णन है।

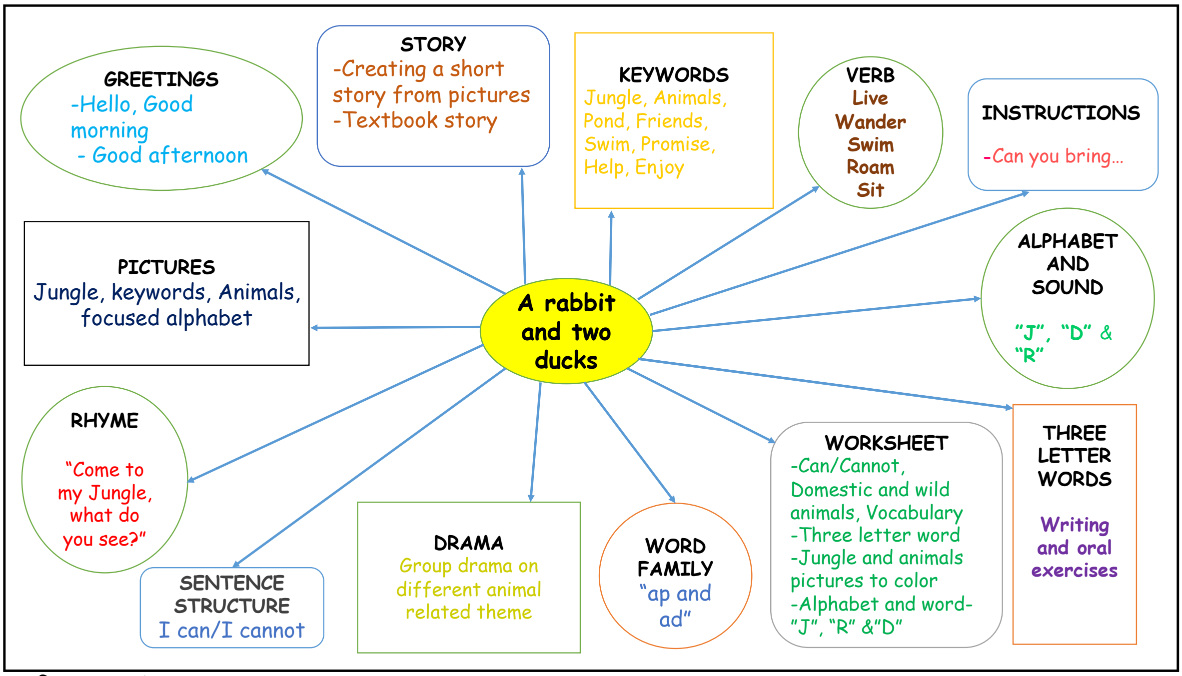
संसाधन के रूप में वर्कशीट

मैंने वर्कशीटों का उपयोग ख़ासतौर से स्तर-1 के बच्चों में जुड़ाव पैदा करने के लिए किया, यानी कि वे बच्चे जो अभी ग्रेड स्तर पर नहीं थे। चूँकि भिन्न स्तर के बच्चों को एक साथ जोड़े रखना थोड़ा कठिन हो जाता है, इसलिए मैंने कक्षा के साथ होने वाले मौखिक और अन्य सामान्य कार्यों के अलावा अन्य सभी गतिविधियों के लिए तीन समूहों के साथ स्तरवार काम करने की योजना बनाई। चूँकि स्तर-1 के बच्चों के लिए सीखने पर ध्यान देने हेतु अधिक रोचक गतिविधियों और जुड़ाव बनाने की ज़रूरत थी इसलिए मैंने उन्हें कक्षा के समय में अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराए।

शुरुआत में मैंने इंटरनेट से वर्कशीट डाउनलोड कीं जिनमें से ज़्यादातर हाथ को साधने और वर्ण अभ्यास से सम्बन्धित थीं। ये वर्कशीट कितनी उपयोगी थीं, इस बात का एहसास होने के बाद मैंने कुछ और वर्कशीट हासिल कीं जो मेरी विषयवस्तु से सम्बन्धित थीं। स्तर-1 के बच्चों के साथ-साथ मैंने कुछ वर्कशीट अन्य बच्चों को भी बाँटीं, जिन्होंने अपनी नोटबुक की अपेक्षा इनमें काम करने की रुचि दिखाई थी। इसलिए मैंने सभी बच्चों के लिए रंग भरने के अभ्यास वाली वर्कशीट हासिल कीं। इसके बाद से बच्चों के लिए कक्षा संसाधन के रूप में वर्कशीट बनाने का सिलसिला नहीं रुका।

विषयवस्तु और स्तर के अनुसार वर्कशीट को बदलना

जब मुझे एहसास हुआ कि वर्कशीट के माध्यम से मैं बच्चों के साथ कितने सार्थक ढंग से जुड़ सकती हूँ, मैंने कक्षा में वर्कशीट लाने की योजना बनाई ताकि बच्चे उनके मूल्यांकन और कक्षा अभ्यास के तौर पर वर्कशीट दिए जाने के लिए सहज हो जाएँ। जब मैंने अध्यायवार शिक्षण की योजना बनाई तो मैंने अपने विषयवस्तु के खाक़े (**चित्र-1**) में वर्कशीटों को शामिल किया ताकि मैं अपनी योजना और विषयवस्तु की माँग के अनुसार वर्कशीट को तैयार कर सकूँ। किसी भी शिक्षक के लिए यह समझना बहुत आवश्यक है कि विषयवस्तु के अनुसार कब, कहाँ और कितनी वर्कशीटों का उपयोग करना है। उदाहरण के लिए, कुछ ऐसे अध्याय भी थे जहाँ मुझे वर्कशीट की ज़रूरत नहीं लगी। इनमें कक्षा की गतिविधियाँ, टीएलएम और होमवर्क के अभ्यास विषयवस्तु को पूरा करने के लिए पर्याप्त थे लेकिन अन्य अध्यायों या विषयवस्तुओं के लिए मैंने उन अध्यायों या विषयवस्तुओं के उद्देश्य के आधार पर वर्कशीट बनाईं। तो विषयवस्तु और उसके उद्देश्य इस मामले में शिक्षक का मार्गदर्शन करते हैं कि गतिविधियों, वर्कशीटों और आकलनों की योजना कैसे बनानी है। कक्षाओं में, हमारे पास तीन (मुख्य) स्तरों के बच्चे होते हैं इसलिए शिक्षक को चाहिए कि वह हर बच्चे को प्रासंगिक व स्तर-अनुरूप अधिगम संसाधन उपलब्ध कराए। मैंने बच्चों के स्तर के अनुसार विषयवस्तु आधारित वर्कशीटों में भी बदलाव किया, उदाहरण के लिए, वर्कशीटों में रंग भरने, हाथ साधने के अभ्यास, अक्षर-शब्द अभ्यास, साधारण वाक्यों के अभ्यास और ऐसे अभ्यास शामिल किए जो बच्चों के सामने कहानी रचने आदि की चुनौती प्रस्तुत करते थे।

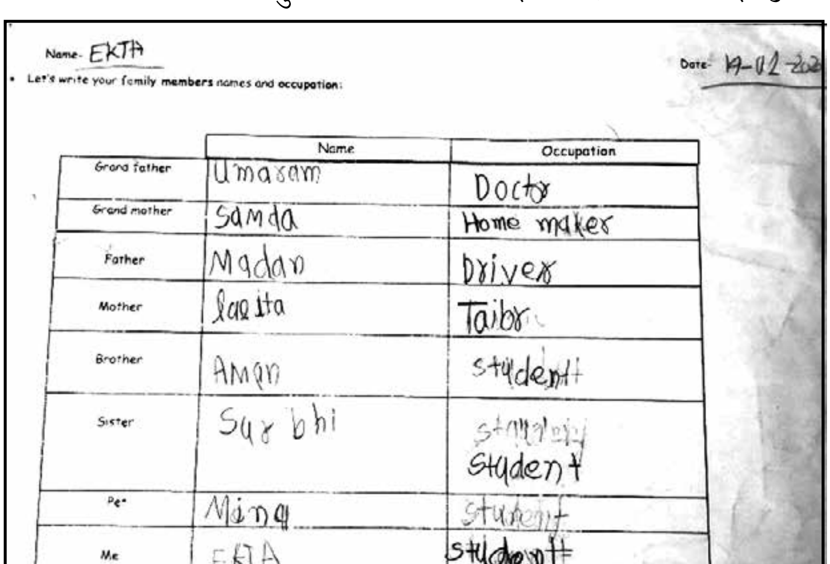


चित्र-1 : विषय सामग्री का खाक़ा

वर्कशीट तैयार करना

शिक्षक अक्सर वर्कशीट के साथ कार्य करने में कठिनाई महसूस करते हैं क्योंकि ऑनलाइन मिलने वाली वर्कशीट विशेषज्ञों या टेक्नोलॉजी का अच्छा ज्ञान रखने वाले लोगों द्वारा तैयार की गई हो सकती हैं लेकिन अक्सर ये वर्कशीट बच्चों के लिए प्रासंगिक नहीं होती हैं। तो शिक्षकों को बच्चों के लिए प्रासंगिक वर्कशीट ढूँढ़ने में कठिनाई होती है। अपनी ज़रूरतों के मुताबिक़ वर्कशीट बनाने की कोशिश की जा सकती है। शुरुआत में मैंने स्वयं हाथ साधने और अक्षर-शब्द अभ्यास के लिए वर्कशीट बनाईं और उनकी फ़ोटोकॉपी करवा ली; बच्चों ने आसानी से बिन्दुओं को मिलाते हुए दी गई पंक्ति के अक्षरों और शब्दों को लिखने का अभ्यास किया। कुछ समय बाद, मैंने इंटरनेट से क्लिपआर्ट तस्वीरें लेकर इन वर्कशीटों को अपने लैपटॉप पर तैयार किया ताकि बच्चे इन तस्वीरों में रंग भर पाएँ और इनके साथ बेहतर ढंग से जुड़ सकें। तो बच्चों की रुचि जगाने के लिए उनके सामने प्रासंगिक और आसानी से रंगी जा सकने वाली तस्वीरों को रखना मेरी प्राथमिकता थी।

रंग करने वाली अच्छी वर्कशीट बनाने के अलावा, मैंने कक्षा में चल रहे विषयों के उद्देश्यों और अभ्यासों के अनुरूप भी वर्कशीट बनाईं, क्योंकि पाठ्यपुस्तकें सीमित, कम रुचिकर और ऐसे कठिन अभ्यासों से भरी हुई थीं जो मुख्य रूप से लेखन पर आधारित थे। मैंने ऐसी वर्कशीट बनाने की कोशिश की जो भिन्न अवधारणाओं के अभ्यास उपलब्ध कराती थीं और बच्चे इनके बहाने जानकारी इकट्ठी करने, चीज़ों को पहचानने,


Name- EKTA
Date- 19-02-202

• Let's write your family members names and occupation:

	Name	Occupation
Grand father	Umasam	Doctor
Grand mother	Samda	Home maker
Father	Madan	Driver
Mother	Lalita	Tailor
Brother	Aman	student
Sister	Surbhi	student
Pet	Mina	student
Me	EKTA	student

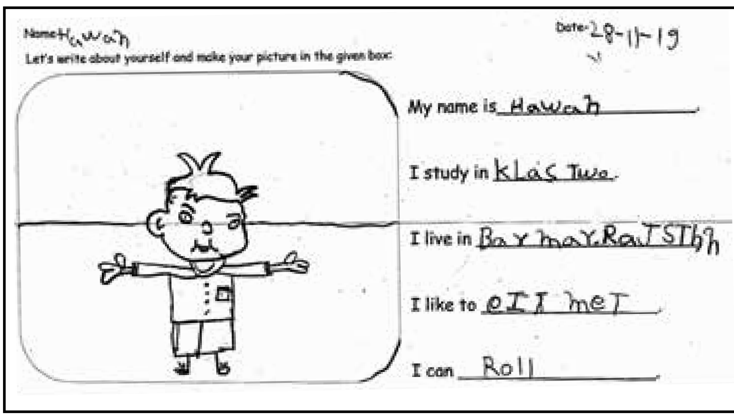
चित्र-2 : जानकारी इकट्ठी करने वाला होमवर्क

स्व-सृजन इत्यादि पहलुओं से रूबरू हो सके, जिससे न सिर्फ़ उनके भीतर रुचि पैदा हुई बल्कि उनके पढ़ने और लिखने के कौशल भी बेहतर हुए।

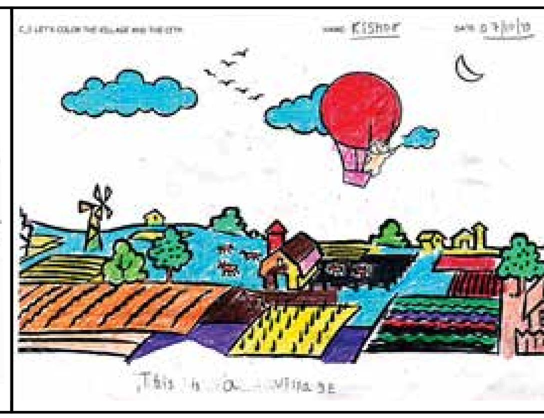
बच्चों की प्रतिक्रिया

बच्चे अपने नियमित क्रियाकलापों से हटकर या पाठ्यपुस्तकों से भिन्न या फिर अपनी नोटबुक में किए जाने वाले नियमित कामों से इतर किसी भी काम के प्रति बड़ी रुचि और उत्साह दिखाते हैं। इसीलिए यह ज़रूरी है कि अपने शिक्षण के प्रयास में विविध गतिविधियों और टीएलएम को शामिल किया जाए ताकि बच्चों के भीतर रुचि पैदा हो सके और सीखने के क्रम में सहायता मिले। मेरी योजना में भी गतिविधियाँ और टीएलएम शामिल थे लेकिन जब वर्कशीट लाईं गईं तो बच्चों ने ख़ुद से सीखने में बहुत रुचि दिखाई; रंग भरने वाली, अभ्यास कराने वाली और जानकारी इकट्ठी करने वाली वर्कशीट उनके लिए काफ़ी रुचिकर थीं।

विशेष तौर पर मेरी कक्षा के तीन स्तर वाले समूहों की बात करें तो स्तर-1 के बच्चों ने वर्कशीटों में दिए गए विभिन्न कार्यों और रोचक खेलों के माध्यम से अपने लेखन कौशल, हाथ के सन्तुलन और अक्षर-शब्द सीखने में बहुत सुधार दिखाया। कभी-कभी नोटबुक में एक ही अक्षर या शब्द को 10 बार लिखना, होमवर्क का बस एक पूरा किया जाने वाला मशीनी अभ्यास हो जाता है। लेकिन जब वर्कशीट में पाँच भिन्न अभ्यासों के माध्यम से उसी अक्षर पर काम किया जाता है तो इसे करने में बच्चा कहीं अधिक रुचि लेता है। इसी तरह स्तर-2 और 3 के बच्चों ने नई शब्दावली व वाक्य संरचनाओं को सीखने, मिश्रित भाषा (हिन्दी और अँग्रेज़ी) की कहानियाँ बनाने तथा अपने शब्द-ध्वनि के ज्ञान के आधार पर अपने आप स्पेलिंग बनाने जैसे कार्यों में बहुत सुधार दिखाया। बच्चों ने रंगों के प्रयोग और चित्रकारी के ज़रिए भावों की अभिव्यक्ति में भी बहुत ही रचनात्मक ढंग से कार्य किया।



चित्र-3 : ध्वनि-अक्षर सम्बन्ध



चित्र-4 : एक बच्चे की रंगीन रचना

विविध प्रयोजनों में वर्कशीट का उपयोग

भले ही वर्कशीटों का ज़्यादातर उपयोग स्कूलों में आकलन के लिए होता है लेकिन इनके कई अन्य प्रयोजन भी हो सकते हैं। वर्कशीटों की मदद से एक शिक्षक बच्चों को सार्थक अभ्यास प्रदान कर सकता है, उनके सीखने का आकलन कर सकता है, समय के साथ होने वाली उनकी प्रगति का लेखा-जोखा रख सकता है, किसी बहु-स्तरीय कक्षा को एक साथ जोड़ सकता है इत्यादि। मेरी कक्षा में वर्कशीटों ने ये सभी कार्य पूरे किए। उदाहरण के लिए, वर्कशीटों के साथ मैंने अपने नियमित क्रियाकलापों में विभिन्न अवधारणाओं के अभ्यासों के लिए पाठ योजनाएँ भी बनाईं, जबकि बच्चे अपनी नोटबुक में होमवर्क के रूप में इन्हीं अवधारणाओं और कौशलों का अभ्यास करते रहे। मैंने बच्चों की पोर्टफ़ोलियो फ़ाइल में उनकी वर्कशीट संलग्न कीं जिससे मैं, अन्य शिक्षक और उनके माता-पिता आसानी से यह देख सकते थे कि समय के साथ बच्चे ने पढ़ने और लिखने में किस तरह प्रगति की थी।

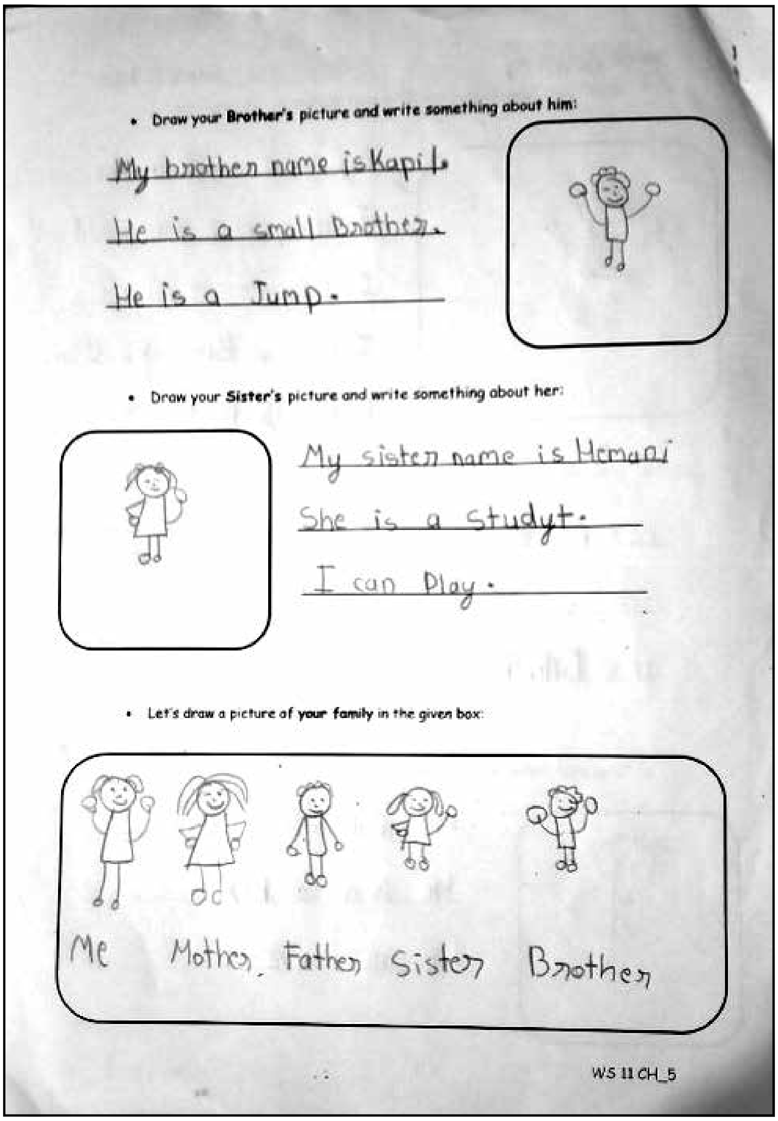
मैंने उनकी मध्य-सत्र और अन्त-सत्र की आकलन शीटें तैयार करने में उन्हीं रूपरेखाओं का इस्तेमाल किया जिन पर हम वर्कशीटों में काम कर चुके थे। लेकिन मैंने अभ्यास बदल दिए ताकि मैं समझ सकूँ कि बच्चों को जो सिखाया गया उन्होंने वह सीखा या नहीं और वे अभ्यासों को आसानी से समझ पाए या नहीं। चूँकि वे निर्देशों से परिचित थे, उन्हें प्रश्नों को समझने में कोई कठिनाई नहीं हुई। तो वर्कशीट ने आकलन अभ्यास के लिए मेरे बच्चों को तैयार करने में, समय के साथ होने वाली उनकी प्रगति का लेखा-जोखा रखने में, उन्हें विभिन्न अवधारणाओं के अभ्यास उपलब्ध कराने में और सीखने में उनकी रुचि को और गहरा बनाने आदि में मेरी मदद की।

निष्कर्ष

वर्कशीटों के साथ, मैंने अपनी कक्षा को अन्य संसाधनों से भी परिचित होने का अवसर दिया। पिक्चर कार्ड, गेम बोर्ड, पोस्टर, वीडियो इत्यादि सभी का प्रयोग हुआ ताकि बच्चे देखकर, सुनकर और उसके बाद अपनी नोटबुक और वर्कशीट

में अभ्यास कर सकें। वर्कशीट अकेले यह करिश्मा नहीं कर सकतीं; लेकिन वे सीखने की प्रक्रिया में सहयोग करती हैं।

अभ्यास के साधन के रूप में वर्कशीट की उपयोगिता सरकार द्वारा स्कूल के बन्द होने के दौरान स्थापित की गई। बच्चों को स्कूल में सिखाई गई चीज़ों का घर में अभ्यास करने के लिए वर्कबुक बनाई गईं। इन वर्कशीट का इस्तेमाल उन शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है जिनके पास सम्भवतः यह अनुभव न हो कि वे इन्हें अपने नियमित क्रियाकलापों में शामिल कर पाएँ। तो हो सकता है कि बच्चों के लिए कार्य बस अभ्यासों को भरने तक ही सीमित रहें और सिखाई गई अवधारणाओं की समझ को और मज़बूत बनाने के अन्य मौखिक या लिखित प्रयास न किए जाएँ। इस कारण से स्कूलों में इस संसाधन का सार्थक प्रयोग करने के लिए सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है ताकि बच्चों को इनका फ़ायदा मिले और वे इनके माध्यम से सीख पाएँ।



चित्र-5 : अपना और परिवार का परिचय



पूजा विश्नोई ने 2018 में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से अपनी स्नातकोत्तर डिग्री पूरी की और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बाड़मेर से जुड़ गईं। उन्होंने एक सरकारी स्कूल में पढ़ाया है और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन स्कूल में अँग्रेज़ी की शिक्षिका के तौर पर कार्य किया है। उनकी रुचि का विषय है इस बात को समझना कि पहली भाषा की सहायता से दूसरी भाषा कैसे सीखी/ सिखाई जा सकती है। उनसे pooja.vishnoi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनुज उपाध्याय **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी